

Reg. No. : N-1316/2014-15



ISSN 2394-2207
May-October, 2021
Vol. VII, No. II
IIJ Impact Factor : 4.101

उठमेष Unmesh

An International Half Yearly
Peer Reviewed Refereed Research Journal
(Arts & Humanities)

प्रधान सम्पादक

डॉ० राधेश्याम मौर्य

सम्पादक

डॉ० शिवेन्द्र कुमार मौर्य

प्रकाशक : जन सेवा एवं शोध शिक्षा संस्थान, प्रतापगढ़, उ०प्र०

♦ कामायनी में सौन्दर्य-बोध डॉ० मीरा कश्यप	138-140
♦ नारी शक्ति का प्रश्न और स्त्री-विमर्श डॉ० मीना यादव व धर्मदेव यादव	141-143
♦ दलितों के सामाजिक विकास में स्वामी अछूतानंद की भूमिका डॉ० अरविन्द कुमार	144-146
♦ अस्पृश्यता निवारण एवं डॉ० भीमराव अम्बेडकर कामधेनु पटोदिया	147-149
♦ सुलतानपुर जनपद में सिंचाई सुविधा एवं जल प्रबन्धन योजना डॉ० अखिलेन्द्र कुमार मिश्र	150-154
♦ वंचित समाज की कहानियाँ मनोज कुमार मौर्य	155-158
♦ वेदों एवं पुराणों में ब्रह्माण्डोत्पत्ति सम्बन्धी विचार डॉ० विनीता वर्मा	159-162
♦ देवप्रयाग विकासखण्ड की धरातलीय संरचना का क्षेत्रीय प्रतिरूप हरिकेश व डॉ० मुक्ता राजे	163-167
♦ आंगनबाड़ी केन्द्रों पर कार्यरत कार्यकर्त्रियों की कार्यसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन रामकृपाल व डॉ० प्रमिला	168-170
♦ बौद्ध कालीन शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन डॉ० उमाशंकर सिंह व राजेश गौड़	171-172
♦ प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों का उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास में योगदान (जनपद फैजाबाद के विशेष संदर्भ में) डॉ० जी०एल० प्रजापति व बृजेश कुमार	173-175
♦ आगामी अतीत : प्रणय का स्वाभिमान प्रमोद यादव	176-178
♦ भारत में लैंगिक संवेदनशीलता : चुनौतियाँ एवं रोकथाम डॉ० नीलम चौहान	179-180
♦ प्रगतिशील शिक्षा : चुनौतियाँ एवं समाधान डॉ० विनय कुमार सिंह	181-182
♦ उत्तर वैदिक काल में व्यापार प्रगति हरीश चौरसिया व डॉ० सुरेश कुमार पाठक	183-185
♦ स्त्री आत्मकथा के बहाने डॉ० रामाशंकर कुशवाहा	186-188
♦ तीर्थयात्रा पर्यटन का आर्थिक पक्ष हरिकेश व डॉ० सुरेश कुमार पाठक	189-191
♦ भारतीय समाज और संस्कृति पर बाजारवाद का प्रभाव : एक अध्ययन डॉ० सुरभि शुक्ला	192-196
♦ कुल्लीभाट और निराला : यथार्थवादी कथ्य का कल्याणकारी रूप डॉ० अजय कुमार सिंह	197-198
♦ 'ठेस' (फणीश्वरनाथ रेणु) कहानी में अभिव्यक्त लोक कलाकार की संवेदना डॉ० अंकिता विश्वकर्मा	199-200
♦ ग्राम की उत्पत्ति एवं विकास नागराज विश्वकर्मा व डॉ० विनोद सिंह	201-202
♦ महिला : आर्थिक पहचान का प्रश्न डॉ० योगेश कुमार मिश्रा	203-204

दलितों के सामाजिक विकास में स्वामी अछूतानंद की भूमिका

डॉ० अरविन्द कुमार*

*असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश : स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' डॉ० भीमराव अम्बेडकर के समकालीन समाज सुधारक एवं संघर्षशील व्यक्ति थे। उन्होंने अपना जीवन संघर्ष दलितों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक उत्थान में ज्योतिबा फुले, डॉ० अम्बेडकर, पेरियार की तरह न्योछावर कर दिया था। स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' जी 'आदि हिन्दू आन्दोलन' के प्रवर्तक तथा बहुजन नवजागरण के अगुवा रहे हैं। उन्होंने डॉ० भीमराव अम्बेडकर के साथ मिलकर दलित समाज के उत्थान के लिए जीवन संघर्ष किया और अपने समय के ब्राह्मणवाद को चुनौती देने वाली कविताएँ एवं नाटक लिखा। स्वामी अछूतानंद जी 'हरिहर' द्वारा चलाया गया आन्दोलन हिन्दी क्षेत्र एवं उत्तर भारत का प्रथम दलित आन्दोलन था, जो मुख्य रूप से दलितों के लिए सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में स्थान दिलाना रहा है। पेरियार के अनुसार "जातिवाद ने भारतीय समाज को पिछड़ा बनाया है। उसने सिवाय बरबादी के हमें कुछ नहीं दिया। लोगों के निगाह में हमें हीन, वंचित एवं विपन्न बनाने वाला भी जातिवाद है... शताब्दियों पुराने जाति-आधारित भेदभाव ने हिन्दू समाज को अज्ञानता के अंधकूप में ढकेल दिया है। उसी ने हिन्दुओं की चारित्रिक एकता अखंडता को विरूपित किया है। जातीय ऊँच-नीच का हिन्दू मानस पर इतना गहरा प्रभाव है कि उसने उसकी सामान्य बुद्धि को भी कुंठित कर दिया है।"¹

मुख्य शब्द : भेदभाव, सामाजिक, राजनीतिक, जातिवाद, वातावरण आदि।

स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' का जन्म 6 मई 1879 में उत्तरप्रदेश में ग्राम-उमरी, पोस्ट-सिरसागंज, जिला-मैनपुरी में चमार जाति में हुआ था। उनके पिता मोतीराम ने उनका नाम हीरालाल रखा था। स्वामी अछूतानंद ने 14 वर्ष की आयु तक उर्दू और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। गाँव में उनके लिए शिक्षा के दरवाजे बन्द थे। किशोरावस्था में उनके मन में निर्गुण के प्रति आस्था जागृत हो गयी थी। कबीर और रविदास के निर्गुण विचार का प्रभाव और पिता की मृत्यु से जन्मे वैराग्य भाव ने एक दिन उन्हें घर छोड़ने पर विवश कर दिया। तब वे सत्य की खोज के साथ-साथ निर्गुण का भी प्रचार-प्रसार करने लगे। स्वामी अछूतानंद अपने भ्रमण में दलित बस्तियों में गये और उनके हीन-दीन दशा को देखकर उनका मन आहत हुआ। स्वामी अछूतानंद की शादी दुर्गाबाई से हुई। दुर्गाबाई भी स्वामी अछूतानंद के साथ दलित बस्तियों में जाकर दलित स्त्रियों को समझातीं। उन्हें अपने बच्चों को पढ़ाने की प्रेरणा देती। धीरे-धीरे दलित बस्तियों में उनका प्रभाव बढ़ने लगा तथा संगठित भी होने लगे।

उन्नीसवीं शताब्दी में दलितों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता आ चुकी थी। जिस समुदाय का संख्याबल ज्यादा

था, उसका अधिक दबदबा दिख रहा था। दलितों की संख्याबल अत्यधिक होने से संघर्ष हिन्दुओं के सामने खतरा मझाने लगा था। उन्हें लगा कि अपने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए दलितों, अल्पसंख्यकों, शूद्रों को अपने साथ रखना आवश्यक है। जिसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं के अनेक सामाजिक आन्दोलनों का निर्माण हुआ है। इनमें दयानंद सरस्वती का 'आर्य-समाज' संगठनात्मक आन्दोलन प्रमुख था। स्वामी दयानंद सरस्वती जाति व्यवस्था का बहिष्कार करते थे, लेकिन वर्ण-व्यवस्था का पुरजोर समर्थन करते थे। ओमप्रकाश कश्यप लिखते हैं कि "आर्य-समाज असलियत में उदार ब्राह्मणवाद का सुरक्षा कवच था। उसके बैनर तले कट्टरपंथी हिन्दू उदार और प्रगतिशील होने का नाटक करने लगे थे। भारतीय समाज पर आर्य-समाज का विशेषकर उत्तर-पश्चिम भारत में व्यापक असर पड़ा। पंजाब, गुजरात, हरियाणा, उत्तरप्रदेश आदि प्रदेशों में निचली और मझोली जातियाँ उसकी ओर आकर्षित होने लगी। मगर आर्य-समाज में शामिल हुए पिछड़ों और अतिपिछड़ों को बहुत जल्दी समझ में आने लगा कि जातिवाद की आलोचना करने वाला आर्य-समाज संगठन के स्तर पर उससे मुक्त नहीं है।"² डॉ० चन्द्र कुमार वरुण अपनी रचना दलित साहित्य आन्दोलन में लिखते हैं कि "भारत में प्राचीनतम सभ्यता वेदकालीन रही है, जिसमें सामान्यतः सामाजिक वातावरण बुद्धिप्रधान, खुले विचार विमर्श तथा कुंठामुक्त चिन्तन का रहा है क्योंकि उसका लक्ष्य वैज्ञानिक उत्कर्ष प्राप्त करने, विजय प्राप्त करते हुए अभ्युदय पाने आदि का रहा, तथापि यहाँ भी विभिन्न वर्गों के अस्तित्व का संकेत मिलता है। अभीजात वर्ग ब्राह्मणों या द्विजों या उन उन्नत तबकों का रहा होगा, जिन्हें ऋषि, गुरु, पुरोहित आदि के रूप में उच्च स्थान प्राप्त था। इस वर्ग के लिए अनेक शब्द प्रयुक्त हैं— आर्य ब्राह्मण, राजन्य, द्विज, पंचजन आदि। अन्य वर्ग शायद शूद्रों, अनायाँ, दासों, दस्युओं, दासी पुत्रों आदि का रहा है। इस वर्ग भेद के कारण वेदकाल में भी थोड़ा भेदभाव अवश्य रहा होगा, किन्तु इस बात के विपुल प्रमाण प्राप्त होते हैं कि उस समय भी अभिजात वर्गों से दूसरे वर्गों के जो व्यक्ति विद्या प्राप्त कर लेते थे या किसी भी गुण के कारण महनीय मानने लायक हो जाते थे, उन्हें पूरे समाज द्वारा मान्यता, सम्मान और आदर दिया जाता था। उस समय के ऐसे अनेक ऋषियों का विवरण मिलता है, जो अभिजात वर्ग के नहीं थे, जिनके कुल-गोत्र का अता-पता नहीं था, किन्तु जिन्होंने अपने उत्कृष्ट कार्यों के कारण ऋषि पद प्राप्त किया। कवश ऐलूश, सत्यकाम जाबाला, तुर कावश्य आदि अनेक ऐसे ऋषियों के विवरण वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं। कवश ऐलूश के बारे में यह कथानक प्रसिद्ध है कि वे अभिजात वर्ग के न होते हुए भी यज्ञविज्ञान के अच्छे अध्येता थे। एक यज्ञ